बी.एस.ओ.सी.-111 : समाजशास्त्रीय विचारक– I
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : BASOH/ BAFSO
पाठ्यक्रम कोडः **BSOC-111**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एस.ओ.सी -111 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-27**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1. मार्क्स के वर्ग चेतना (Class Consciousness) संबंधी विश्लेषण की व्याख्या कीजिए। 20

2. वेबर की वैधता (Legitimacy) की अवधारणा का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। 20

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3. मार्क्स की अलगाव (Alienation) संबंधी अवधारणा की चर्चा कीजिए। 10

4. सामान्य (Normal) तथा विकृत (Pathological) सामाजिक तथ्यों के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए। 10

5. आधुनिक समाज की वेबर की समझ में नौकरशाही (Bureaucracy) की क्या भूमिका है? 10

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6. 'सामूहिक चेतना' (Collective Conscience) से आप क्या समझते हैं? 06

7. ऐतिहासिक भौतिकवाद (Historical Materialism) की अवधारणा की व्याख्या कीजिए। 06

8. प्रस्थिति समूह (Status Group) क्या है? 06

9. यांत्रिक एकता (Mechanical Solidarity) से आप क्या समझते हैं? 06

10. अधिशेष मूल्य (Surplus Value) की अवधारणा की व्याख्या कीजिए। 06

1. मार्क्स के वर्ग चेतना (Class Consciousness) संबंधी विश्लेषण की व्याख्या कीजिए।

उत्तर

मार्क्स के समाजशास्त्रीय चिंतन में वर्ग चेतना केवल अपनी आर्थिक कठिनाइयों को जान लेने का नाम नहीं है। इसका अर्थ उस सामाजिक संबंध को पहचानना है जिसके कारण एक वर्ग के लोग उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण रखते हैं, जबकि दूसरे वर्ग को जीवन-निर्वाह के लिए अपनी श्रम-शक्ति बेचनी पड़ती है। वर्ग चेतना इस अनुभव से आगे जाकर साझा हितों, शोषण की संरचना तथा सामूहिक परिवर्तन की संभावना का बोध पैदा करती है। इसे समझने के लिए मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद, वर्ग-संघर्ष और पूँजीवादी उत्पादन-पद्धति को साथ देखना आवश्यक है।

वर्ग का आर्थिक आधार

मार्क्स के अनुसार समाज में व्यक्तियों का वर्ग-स्थान उनकी आय या प्रतिष्ठा मात्र से निर्धारित नहीं होता; निर्णायक बात उत्पादन के साधनों से उनका संबंध है। पूँजीवाद में कारखानों, पूँजी और प्रमुख संसाधनों के स्वामी बुर्जुआ वर्ग का गठन करते हैं। दूसरी ओर सर्वहारा या मजदूर वर्ग के पास उत्पादन के साधनों का स्वामित्व नहीं होता। मजदूर उत्पादन में योगदान देता है, लेकिन उत्पाद और उसके विनिमय पर नियंत्रण पूँजीपति के पास रहता है। इस असमान संबंध से वर्ग-विरोध पैदा होता है। समान संरचनात्मक स्थिति के बावजूद सभी श्रमिक आरंभ से अपना साझा वर्गीय हित नहीं समझते।

वस्तुगत वर्ग और सचेत वर्ग

वर्ग चेतना की व्याख्या करते समय 'अपने-आप में वर्ग' और 'अपने लिए वर्ग' का भेद उपयोगी है। पहले स्तर पर लोगों की आर्थिक स्थिति और शोषण का अनुभव समान हो सकता है, फिर भी वे अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में संघर्ष करते हैं। दूसरे स्तर पर वे समझने लगते हैं कि उनकी समस्याओं की जड़ केवल किसी खराब प्रबंधक या कम वेतन में नहीं, बल्कि उत्पादन-संबंधों में भी है। वे अपनी सामूहिक पहचान विकसित करके संगठन, यूनियन, राजनीतिक भागीदारी तथा